यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।।३९।।

यत्=जो; **च**=भी; **अपि**=हो; **सर्वभूतानाम्**=सम्पूर्ण सृष्टि का; **बीजम्**=कारण; **तत्**=वह; **अहम्**=मैं (हूँ); **अर्जुन**=हे अर्जुन; **न**=नहीं; **तत्**=वह; **अस्ति**=है; **विना**=बिना; **यत्**=जो; **स्यात्**=हो; **मया**=मेरे; **भूतम्**=सृष्ट पदार्थ; **चराचरम्**=स्थावर-जंगम।

अनुवाद

हे अर्जुन ! अधिक क्या, मैं ही सम्पूर्ण सृष्टि का आदिबीज हूँ। ऐसा चराचर कुछ भी नहीं है जो मेरे बिना हो।।३९।।

तात्पर्य

प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। इस सृष्टि के कारण अथवा बीज श्रीकृष्ण हैं। श्रीकृष्ण की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता; अतएव उन्हें सर्वशक्तिमान् कहा जाता है। उनकी शक्ति के बिना चराचर किसी भी पदार्थ का अस्तित्व नहीं हो सकता। जो सत्ता श्रीकृष्ण की शक्ति पर आधारित नहीं है, वह माया है; अर्थात्, वास्तव में है ही नहीं।

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया।।४०।।

न=नहीं; **अन्तः**=अन्त; **अस्ति**=है; **मम**=मेरी; **दिव्यानाम्**=दिव्य; **विभूतीनाम्**=विभूतियों का; **परतंप**=हे शत्रुविजयी अर्जुन; **एषः**=यह; **तु**=तो; **उद्देशतः**=उदाहरण के रूप में संक्षेप से; **प्रोक्तः**=कहा गया है; **विभूतेः**=विभूतियों का; **विस्तरः**=विस्तार; **मया**=मेरे द्वारा।

अनुवाद

हे शत्रुविजयी अर्जुन ! मेरी दिव्य विभूतियों का अन्त नहीं है। यह तो मैंने तेरे लिए अपनी विभूतियों का विस्तार संक्षेप से कहा है।।४०।।

तात्पर्य

वैदिक शास्त्रों के अनुसार, यद्यपि श्रीभगवान् की विविध विभूतियों और शक्तियों को नाना प्रकार से समझाया जाता है, पर इनका अन्त नहीं है। इसलिए श्रीभगवान् की सम्पूर्ण विभूतियों और शक्तियों का वर्णन नहीं किया जा सकता। यहाँ तो अर्जुन की जिज्ञासा का समाधान करने के लिए केवल कुछ दृष्टान्त दिये गये हैं।

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्।।४१।।

यत् यत्=जो-जो भी; **विभूतिमत्**=ऐश्वर्य से युक्त; **सत्त्वम्**=वस्तु (हो); **श्रीमत्**=सुन्दर; **ऊर्जितम्**=यशस्वी, शक्तिशाली; **एव**=निःसन्देह; **वा**=अथवा; **तत्-तत्**=उस सब को; **एव**=निःसन्देह; **अवगच्छ**=जान; **त्वम्**=तू ; **मम**=मेरे; **तेजः अंश**=तेज के अंश से; **सम्भवम्**=उत्पन्न हुई।